Preface

प्रस्तावना

2007 अगस्त को महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय से मैंने एम.ए. प्रथम स्थान से पास किया उसके बाद पीएच-डी उपाधि हेतु शोध कार्य करने की इच्छा हुई। मेरी इस इच्छा को एक खुला आसमान मिला महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. लता सुमंत जी से जो मुझसे वार्तालाप किया करती और लिखकर लाने को कहती समाज, परिवार शोषण, नारी की स्थिति पर छः महीने के परिश्रम के बाद मेरी अभिरुचि को देखकर गुरुवर डॉ. लता सुमंत जी ने मुझसे शोध-कार्य के विषय पर मेरी इच्छा को पूछा तब एकाएक मेरे सामने महादेवी जी की गद्य कृतियों के पात्र सजीव होकर मेरे इर्द-गिर्द के वातावरण में मंडराने लगे। तब मैंने इन पात्रों के अन्तर्गत भावों को गहराई से झाँक कर देखा और महादेवी जी के गद्य साहित्य से प्रभावित होकर मैंने गुरुवर डॉ. लता सुमंत जी के सम्मुख अपने मनोभाव रखे और शोध-कार्य का विषय तय कर लिया। **''महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना और वैयक्तिक संवेदनाएँ''**

आधुनिक युग में सामाजिक चेतना कहाँ तक व्याप्त है और समस्त समाज में बदलते संस्कार एवं मनुष्य की सोच पर कितनी तीव्रता से प्रभाव पड़ रहा है। यह हर व्यक्ति के चिन्तन का विषय है। साथ ही वैयक्तिक संवेदनाएँ आज लुप्त हो रही हैं। मनुष्य के मन से दिल की दूरियाँ बढ़ती जा रही है। सहानुभूति के नाम पर स्वयं का स्वार्थ सिद्ध करने में लीन हो गये हैं। चाहे घर या परिवार के सदस्य रूठे कोई परवाह नहीं है। परवाह है तो सिर्फ अपना उल्लू सीधा करने की।

महादेवी जी समग्र हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ कवि में से एक हैं। महादेवी जी आधुनिक हिन्दी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा की धनी लब्ध प्रतिष्ठित लेखिका हैं। महादेवी जी ने कवि और गद्यकार दोनों ही रूपों में हिन्दी जगत में अपनी सशक्त लेखनी चलाई है। कोई भी पाठक या श्रोता वर्ग इनके साहित्य से अछूता नहीं रह सका होगा।

महादेवी वर्मा नाम हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर बन चुका है। महादेवी जी के गद्य साहित्य

संस्मरण, रेखाचित्र एवं निबन्ध भारतीय जन-मानस एवं उसकी भावनाओं के वास्तविक प्रतिरूप है। युग प्रवर्तक श्रेष्ठ लेखिका की लेखनी में वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ मुखर होकर बोलती दिखाई देती हैं। इसके लिए उन्होंने एक मनीषी की भाँति सतत् चिन्तन किया है। मानवता के हित के लिए किए गये अपने इस अथक प्रयास के द्वारा यथार्थ के धरातल पर रहकर प्रत्येक घटना तथा पात्रों को प्रस्तुत किया है। उसके चरित्र पात्र स्वयं कम बोलते हैं, इसलिए संवाद कम है किन्तु जितने संवाद हैं वे चरित्र की सूत्रख्य में व्याख्या करने में समर्थ हैं। लेखिका स्वयं उनके विषय में अधिक बोलती हैं किन्तु उनके बोलने में ही विद्रोही वाणी सामाजिक चेतना एवं संवेदनाएँ है।

महादेवी जी के गद्य-साहित्य में सामाजिक चेतना और वैयक्तिक संवेदनाएँ निहित होने के कारण वर्तमान पीढ़ी को दिशा प्राप्त कराती है।

इससे पहले भी महादेवी के गद्य साहित्य पर शोध-कार्य हुआ है, लेकिन मेरे इस शोध प्रबन्ध के बारे में मैं इतना तो अवश्य ही कहना चाहूँगी कि तटस्थ भाव से विषय के चिन्तन, विचार एवं लेखन का यह मेरा एक मौलिक प्रयास है। जिसे मैंने अपने शोध-कार्य का विषय बनाकर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

अनुसंधान की सुविधा के लिए मैंने शोध-प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभाजित किया है। जिसमें मैंने काफी कुछ समेटने की पूरी कोशिश की है। जो इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय : इस अध्याय के अन्तर्गत महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं जीवन यात्रा का परिचय दिया गया है। एवं छायावादी युग के प्रमुख आधार स्तंभ कवियों - प्रसाद, निराला, पन्त एवं छायावाद में महादेवी का स्थान, योगदान संक्षिप्त परिचय दिया है। महादेवी जी के पद्य-गद्य साहित्य की कृतियों का संक्षिप्त परिचय एवं महत्व प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय : इस अध्याय के अन्तर्गत मैंने हिन्दी गद्य का विकास आधुनिक हिन्दी गद्य का आरंभ प्रथम चार आचार्यों का योगदान एवं साहित्य की परिभाषा, स्वरूप एवं अंग प्रस्तुत किया है अंग के अन्तर्गत मैंने गद्य साहित्य की विविध विधाएँ - उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी आत्मकथा, पत्र, रिपोर्ताज, यात्रा, गद्यकाव्य, निबन्ध और समालोचना आदि की परिभाषा स्वरूप एवं विकास बताया है।

तृतीय अध्याय में महादेवी वर्मा के गद्य विधाओं संस्मरणों, रेखाचित्रों एवं निबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय में समाज, सामाजिक स्वरूप और दृष्टि के अन्तर्गत काफी कुछ समेटने का प्रयास किया है। जैसे सामाजिक, स्तरीकरण की शुरूआत एवं सिद्धान्त सामाजिक विकास और वर्ग-संघर्ष की भूमिका, सामाजिक परिवर्तन और जीवन मूल्य समाज शास्त्रीय अध्ययन के आयाम चेतन्य शब्द का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप सामाजिक चेतना साहित्य और समाज आदि का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय में महादेवी वर्मा के संस्मरण रेखाचित्र एवं निबंधों में सामाजिक चेतना और वैयक्तिक संवेदनाएँ के अन्तर्गत मैंने यह बताया है कि महादेवी जी के गद्य साहित्य प्रगति के अग्रदूत हैं अपनी पैनी दृष्टि तथा तीव्र सहानुभूति के द्वारा उन्होंने समाज तथा मानवता की प्रगति के लिए जैसा महसूस किया उनकी सम्पूर्ण रचनाएं उन्हीं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। सच्चे अर्थों में महादेवी जी के गद्य साहित्य वर्तमान युग की मानवता के लिए दिशा बोध प्रदान करते हैं। गद्य विधाओं में उन्होंने वर्तमान पीढ़ी को प्रगति का संदेश दिया है। यही नहीं नारी की समस्याओं को बताते हुए प्रगति का समर्थन किया है। साथ ही पुरानी रूढ़ियों के प्रति घृणा व्यक्त की है। इस प्रकार महादेवी जी ने एक सच्चे रचनाकार को समाजिक चेतना एवं मानवीय दायित्व का निर्वाह करते हुए समाज एवं व्यक्ति के समाने ला रखा है।

षष्ठ अध्याय में महादेवी के गद्य साहित्य में वैयक्तिक संवेदनाओं का यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है उनके गद्य में मानवीय संवेदनाएँ, पशु-पक्षी संवेदनाएँ व्यक्त करते हुए युग बोध पर भी विचार किया है। आधुनिक समाज, पुरुष और नारी का सम्बन्ध शिक्षा की स्थिति, धर्म स्थिति, आधुनिक राजनीति, आर्थिक स्थिति, बौद्धिकता एवं बुद्धिजीवी वर्ग पर महादेवी के विचार एवं उनके गद्य में व्यक्त वैयक्तिक संवेदनाएं व्यक्तिगत विचारधारा के द्योतक न होकर जन-मानव की अनुभूतियाँ हैं।

सप्तम अध्याय में मैंने इलाहाबाद 'साहित्यकार संसद भवन' की एक मुलाकात एवं साहित्यकार संसद भवन के वर्तमान समय के प्रधानमंत्री श्री प्रद्युम्ननाथ तिवारी (करुणेश) जी का साक्षात्कार महादेवी जी के संदर्भ में लिया। एवं अन्य साहित्यकारों के साक्षात्कार महादेवी के संदर्भ में पुस्तकों के माध्यम से शोध किया।

अष्ठम अध्याय समस्त कार्यों को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है।